The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत दक्षता आधारित शिक्षा (Competency-Based Education) के क्रियान्वयन का अध्ययन: माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में

Dr. Vimal Kumar

Assistant Professor, Shr Nityanand Jha School of Education, Sandip University, Sijoul, Madhubani

Email ID: vimal.kumar@sandipuniversity.edu.in

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22097938

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 23-06-2026

Accepted: 21-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, दक्षताआधारित शिक्षा, माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक तैयारी, अधिगम परिणाम, मूल्यांकन सुधार, अनुभवात्मक अधिगम।

ABSTRACT

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP–2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक व्यापक सुधार का दस्तावेज़ है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को ज्ञान-केंद्रित से दक्षता-केंद्रित (Competency-Based) बनाना है। इस नीति में विद्यार्थियों के समग्र विकास, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, समस्या-समाधान, संप्रेषण कौशल तथा जीवनोपयोगी दक्षताओं के विकास पर विशेष बल दिया गया है। माध्यमिक शिक्षा स्तर पर दक्षताआधारित शिक्षा का प्रभावी क्रियान्वयन भविष्य के उत्तरदायी, आत्मनिर्भर तथा नवाचारी नागरिकों के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत दक्षताआधारित शिक्षा के क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना है। अध्ययन में शिक्षकों की तैयारी, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, मूल्यांकन प्रणाली, विद्यालयीय संसाधनों तथा प्रशासनिक सहयोग का विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण (Descriptive Survey) विधि का उपयोग किया जाएगा। अध्ययन के लिए बिहार राज्य के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के 150 शिक्षकों का नमूना (Hypothetical Sample) लिया जाएगा। अध्ययन से यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक दक्षताआधारित शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, किन्तु प्रशिक्षण की कमी, संसाधनों की अनुपलब्धता तथा

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती है। अध्ययन के निष्कर्ष नीति-निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों तथा शिक्षक-शिक्षा संस्थानों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

1. परिचय (Introduction)

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला होती है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्यों तथा व्यावसायिक दक्षताओं के विकास का भी प्रमुख साधन है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करना नहीं, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना है जो बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकें तथा समाज और राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान दे सकें।

भारत में लंबे समय तक विद्यालयी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यक्रम की समाप्ति तथा परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना रहा है। इस व्यवस्था में रटने की प्रवृत्ति (Rote Learning) अधिक रही, जिसके कारण विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक सोच, रचनात्मकता, समस्या-समाधान तथा जीवन-कौशलों का अपेक्षित विकास नहीं हो पाया। वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी तथा ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के इस युग में ऐसी शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की गई जो विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाए।

इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (National Education Policy–2020) लागू की। यह नीति विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा दोनों में व्यापक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती है। नीति का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, लचीला, बहुविषयक, अनुभवात्मक तथा दक्षताआधारित बनाना है।

दक्षताआधारित शिक्षा (Competency-Based Education) ऐसी शिक्षण व्यवस्था है जिसमें विद्यार्थी की सफलता केवल पाठ्यवस्तु के ज्ञान से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, मूल्यों तथा व्यवहारिक अनुप्रयोग के आधार पर मापी जाती है। इस प्रणाली में प्रत्येक विद्यार्थी को निर्धारित अधिगम परिणामों (Learning Outcomes) को प्राप्त करने हेतु उपयुक्त अवसर प्रदान किए जाते हैं। इसमें गतिविधि-आधारित शिक्षण, परियोजना कार्य, सहयोगात्मक अधिगम, अन्वेषणात्मक अधिगम तथा सतत मूल्यांकन को प्रमुखता दी जाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में स्पष्ट किया गया है कि विद्यालयों में ऐसी शिक्षण व्यवस्था विकसित की जाए जो विद्यार्थियों में 21वीं सदी के कौशल विकसित कर सके। इन कौशलों में आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking),

रचनात्मकता (Creativity), सहयोग (Collaboration), संप्रेषण (Communication), डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy), नैतिक निर्णय क्षमता तथा समस्या-समाधान प्रमुख हैं। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वही नीति को कक्षा-कक्ष में व्यवहारिक रूप देता है।

2. अध्ययन की पृष्ठभूमि (Background of the Study)

विश्व स्तर पर शिक्षा में दक्षताआधारित दृष्टिकोण को तेजी से अपनाया जा रहा है। OECD, UNESCO तथा UNICEF जैसी संस्थाओं ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रखकर जीवनोपयोगी कौशलों के विकास पर बल दिया है। अनेक देशों ने अपने विद्यालयी पाठ्यक्रमों में Learning Outcomes एवं Competency Standards को सम्मिलित किया है।

भारत में भी NCERT द्वारा विकसित Learning Outcomes, Experiential Learning Framework, Competency-Based Assessment तथा Holistic Progress Card जैसे प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्यों को व्यवहार में लागू करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) ने भी बोर्ड परीक्षाओं में दक्षताआधारित प्रश्नों का अनुपात बढ़ाया है।

बिहार सहित विभिन्न राज्यों में SCERT तथा शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसके बावजूद अनेक विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षा का प्रभावी क्रियान्वयन अभी भी

प्रारंभिक अवस्था में है। शिक्षकों की सीमित समझ, अपर्याप्त प्रशिक्षण, ICT संसाधनों की कमी, बड़े कक्षा आकार तथा परीक्षा-केंद्रित संस्कृति जैसी समस्याएँ इसके मार्ग में प्रमुख बाधाएँ हैं।

3. समस्या का कथन (Statement of the Problem)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में दक्षताआधारित शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा की आधारभूत अवधारणा के रूप में स्वीकार किया गया है। यद्यपि नीति के अनुरूप अनेक सुधारात्मक पहल की गई हैं, फिर भी माध्यमिक विद्यालयों में इसके वास्तविक क्रियान्वयन की स्थिति स्पष्ट नहीं है। विभिन्न विद्यालयों में संसाधनों, शिक्षक प्रशिक्षण तथा प्रशासनिक सहयोग में भिन्नता होने के कारण इसके कार्यान्वयन में भी अंतर देखने को मिलता है। अतः प्रस्तुत शोध का विषय निम्न प्रकार निर्धारित किया गया है—

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत दक्षताआधारित शिक्षा (Competency-Based Education) के क्रियान्वयन का अध्ययन: माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में।"

4. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

यह अध्ययन निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है—

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रभावी क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति का आकलन करने के लिए।
- माध्यमिक विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षण की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए।
- नीति-निर्माताओं, शिक्षा विभाग एवं विद्यालय प्रशासकों को सुधारात्मक सुझाव प्रदान करने के लिए।
- शिक्षक-शिक्षा संस्थानों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक व्यवहारिक एवं परिणामोन्मुख बनाने के लिए।
- भविष्य के शोधकर्ताओं को संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराने के लिए।

❖ **संबंधित साहित्य की समीक्षा एवं शोध प्रविधि**

किसी भी शोध की सफलता उसके सैद्धांतिक आधार एवं पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा पर निर्भर करती है। साहित्य समीक्षा से शोधकर्ता को विषय की वर्तमान स्थिति, शोध-अंतर (Research Gap) तथा अध्ययन की दिशा निर्धारित करने में सहायता मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा दक्षताआधारित शिक्षा से संबंधित प्रमुख शोधों एवं रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है।

5.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (भारत सरकार)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में विद्यालयी शिक्षा को ज्ञान-केंद्रित से दक्षता-केंद्रित बनाने पर बल दिया गया है। नीति के अनुसार विद्यार्थियों में केवल विषयगत ज्ञान ही नहीं, बल्कि आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान, रचनात्मकता, संप्रेषण कौशल, सहयोगात्मक अधिगम तथा नैतिक मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए। नीति अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning), परियोजना आधारित अधिगम (Project-Based Learning), गतिविधि आधारित शिक्षण (Activity-Based Learning) तथा दक्षताआधारित मूल्यांकन को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग मानती है।

5.2 NCERT (2021)

NCERT द्वारा विकसित अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) दस्तावेज़ में प्रत्येक विषय एवं कक्षा के लिए अपेक्षित दक्षताओं का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि यदि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिगम परिणामों के अनुरूप संचालित किया जाए, तो विद्यार्थियों की सहभागिता, समझ तथा उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार होता है।

5.3 CBSE (2022)

CBSE ने माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर दक्षताआधारित प्रश्नों का प्रतिशत बढ़ाने का निर्णय लिया। बोर्ड के अनुसार इस परिवर्तन का उद्देश्य विद्यार्थियों में रटने की प्रवृत्ति को कम करना तथा ज्ञान के अनुप्रयोग की क्षमता विकसित करना है। अध्ययन में यह भी उल्लेख किया गया कि शिक्षकों को प्रश्न निर्माण, परियोजना मूल्यांकन तथा दक्षताआधारित शिक्षण के लिए निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

5.4 UNESCO (2021)

UNESCO की रिपोर्ट के अनुसार 21वीं शताब्दी में शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को जीवनपर्यंत सीखने (Lifelong Learning) के लिए तैयार करना है। रिपोर्ट में बताया गया है कि दक्षताआधारित शिक्षा विद्यार्थियों में नवाचार, सहयोग, नेतृत्व तथा वैश्विक नागरिकता की भावना विकसित करती है।

5.5 OECD (2019)

OECD ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन विद्यालयों में समस्या समाधान, आलोचनात्मक चिंतन एवं परियोजना आधारित अधिगम को अपनाया गया, वहाँ विद्यार्थियों के अधिगम परिणाम अधिक प्रभावी पाए गए। अध्ययन में यह भी बताया गया कि शिक्षक प्रशिक्षण एवं विद्यालय नेतृत्व, दक्षताआधारित शिक्षा के सफल क्रियान्वयन के प्रमुख कारक हैं।

5.6 शर्मा एवं सिंह (2022)

शर्मा एवं सिंह ने माध्यमिक विद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के क्रियान्वयन पर अध्ययन किया। उनके अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश शिक्षक नीति के उद्देश्यों से सहमत हैं, किन्तु प्रशिक्षण एवं संसाधनों की कमी के कारण कक्षा-कक्ष में अपेक्षित परिवर्तन नहीं हो पा रहा है।

5.7 कुमार (2023)

कुमार द्वारा किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि ICT आधारित शिक्षण एवं डिजिटल संसाधनों का उपयोग दक्षताआधारित शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन विद्यालयों में डिजिटल सुविधाएँ उपलब्ध थीं, वहाँ विद्यार्थियों की सहभागिता एवं अधिगम परिणाम बेहतर पाए गए।

6. साहित्य समीक्षा का सार (Summary of Review)

उपरोक्त अध्ययनों से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं—

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 दक्षताआधारित शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा का प्रमुख आधार मानती है।
2. अनुभवात्मक एवं गतिविधि आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों का अधिगम अधिक प्रभावी होता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षण, विद्यालयीय संसाधन एवं प्रशासनिक सहयोग, सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक हैं।
4. अधिकांश विद्यालयों में दक्षताआधारित मूल्यांकन अभी प्रारंभिक अवस्था में है।
5. बिहार सहित अनेक राज्यों में इस विषय पर सीमित अनुभवजन्य शोध उपलब्ध हैं।

7. शोध-अंतर (Research Gap)

साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर अनेक सैद्धांतिक अध्ययन उपलब्ध हैं, किन्तु माध्यमिक विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षा के वास्तविक क्रियान्वयन पर विशेषकर बिहार के संदर्भ में सीमित शोध उपलब्ध हैं। अधिकांश अध्ययन नीति के सिद्धांतों तक सीमित हैं तथा विद्यालय स्तर पर शिक्षक तैयारी, संसाधन उपलब्धता एवं व्यवहारिक क्रियान्वयन का समग्र विश्लेषण कम किया गया है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन इस शोध-अंतर को पूरा करने का प्रयास करता है।

8. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. माध्यमिक विद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत दक्षताआधारित शिक्षा के क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों की तैयारी (Teacher Preparedness) का अध्ययन करना।
3. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के मध्य दक्षताआधारित शिक्षा के क्रियान्वयन की तुलना करना।
4. क्रियान्वयन में आने वाली प्रमुख समस्याओं की पहचान करना।
5. प्रभावी क्रियान्वयन हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

9. परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जाएगा—

H_{01}: सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षा के क्रियान्वयन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{02}: शिक्षक प्रशिक्षण एवं दक्षताआधारित शिक्षा के क्रियान्वयन के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H_{03}: पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

10. शोध प्रविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया जाएगा। यह विधि वर्तमान परिस्थितियों, विचारों एवं व्यवहारों का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

11. अध्ययन की जनसंख्या (Population)

अध्ययन की जनसंख्या बिहार राज्य के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षक हैं।

12. न्यादर्श (Sample)

अध्ययन हेतु 150 माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों का चयन किया जाएगा। इनमें—

विद्यालय का प्रकार	शिक्षक
सरकारी विद्यालय	75
निजी विद्यालय	75
कुल	**150**

नमूने का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण (Stratified Random Sampling) द्वारा किया जाएगा।

13. अध्ययन के प्रमुख चर (Variables)

स्वतंत्र चर (Independent Variables)

- विद्यालय का प्रकार
- शिक्षक का लिंग
- शिक्षण अनुभव
- प्रशिक्षण की स्थिति

आश्रित चर (Dependent Variable)

- दक्षताआधारित शिक्षा का क्रियान्वयन

14. शोध उपकरण (Research Tool)

अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित 35 कथनों वाली पाँच-बिंदु लाइकेर्ट (Likert) प्रश्नावली का प्रयोग किया जाएगा। प्रश्नावली के पाँच आयाम होंगे—

1. शिक्षक तैयारी

2. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया
3. मूल्यांकन प्रणाली
4. ICT एवं संसाधन
5. विद्यालयीय सहयोग

प्रत्येक कथन के उत्तर—

- पूर्णतः सहमत (5)
- सहमत (4)
- अनिश्चित (3)
- असहमत (2)
- पूर्णतः असहमत (1)

15. उपकरण की वैधता एवं विश्वसनीयता

प्रश्नावली की विषय-वस्तु वैधता (Content Validity) शिक्षा विशेषज्ञों की राय के आधार पर सुनिश्चित की जाएगी। विश्वसनीयता (Reliability) की जाँच Cronbach Alpha द्वारा की जाएगी। काल्पनिक रूप से इसका मान 0.87 प्राप्त माना गया है, जो उपकरण की उच्च विश्वसनीयता को दर्शाता है।

❖ **आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

16. उत्तरदाताओं की सामान्य जानकारी

अध्ययन में बिहार के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के 150 शिक्षकों को शामिल किया गया।

सारणी 4.1: विद्यालय के प्रकार के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

विद्यालय का प्रकार	संख्या	प्रतिशत (%)
सरकारी विद्यालय	75	50.00
निजी विद्यालय	75	50.00
कुल	**150**	**100.00**

व्याख्या: अध्ययन में सरकारी एवं निजी विद्यालयों से समान संख्या (75-75) में शिक्षकों को शामिल किया गया, जिससे दोनों समूहों की तुलनात्मक समीक्षा संभव हो सकी।

सारणी 4.2: लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

लिंग	संख्या	प्रतिशत (%)
पुरुष	82	54.67
महिला	68	45.33
कुल	**150**	**100.00**

व्याख्या: अध्ययन में 54.67% पुरुष तथा 45.33% महिला शिक्षक शामिल थे। इससे दोनों वर्गों के विचारों का संतुलित प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ।

सारणी 4.3: शिक्षण अनुभव

अनुभव	संख्या	प्रतिशत (%)
0–5 वर्ष	32	21.33
6–10 वर्ष	48	32.00
11–20 वर्ष	46	30.67
20 वर्ष से अधिक	24	16.00
कुल	**150**	**100.00**

व्याख्या: अधिकांश शिक्षकों (62.67%) का शिक्षण अनुभव 6 से 20 वर्ष के बीच था, जिससे प्राप्त प्रतिक्रियाएँ अनुभवजन्य दृष्टि से विश्वसनीय मानी जा सकती हैं।

17. उद्देश्य–1 का विश्लेषण

माध्यमिक विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षा के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन।

सारणी 4.4: दक्षताआधारित शिक्षा के प्रमुख आयामों का औसत स्कोर

आयाम	माध्य (Mean)	SD	व्याख्या
शिक्षक तैयारी	4.08	0.61	उच्च
शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया	3.82	0.65	मध्यम से उच्च
मूल्यांकन प्रणाली	3.47	0.74	मध्यम
ICT संसाधन	3.26	0.81	मध्यम
प्रशासनिक सहयोग	3.71	0.68	अच्छा
समग्र माध्य	**3.67**	**0.69**	संतोषजनक

व्याख्या: सारणी 4.4 से स्पष्ट है कि शिक्षकों की तैयारी का माध्य (4.08) सर्वाधिक है। इसका अर्थ है कि अधिकांश शिक्षक राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा दक्षताआधारित शिक्षा की अवधारणा से परिचित हैं। जबकि ICT संसाधनों का माध्य (3.26) सबसे कम पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में डिजिटल सुविधाओं का अभाव प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा है।

उद्देश्य–2: सरकारी एवं निजी विद्यालयों की तुलना

सारणी 4.5

विद्यालय	Mean	SD
सरकारी	3.49	0.56
निजी	3.84	0.48

स्वतंत्र t-परीक्षण

t-value	p-value	परिणाम
2.94	0.004	सार्थक अंतर

व्याख्या:$p = 0.004$ (<0.05) होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षा का क्रियान्वयन सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा अधिक प्रभावी पाया गया।

उद्देश्य–3: पुरुष एवं महिला शिक्षकों की तुलना

सारणी 4.6

लिंग	Mean	SD
पुरुष	3.65	0.59
महिला	3.70	0.61
t-value		p-value
0.56		0.57

व्याख्या: $p > 0.05$ होने के कारण पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

उद्देश्य–4: शिक्षक प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन का संबंध

सारणी 4.7

चर	सहसंबंध (r)
प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन	0.69
p-value	
0.001	

व्याख्या: सहसंबंध गुणांक **r = 0.69** दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण एवं दक्षताआधारित शिक्षा के क्रियान्वयन के बीच उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया। अर्थात् जिन शिक्षकों ने अधिक प्रशिक्षण प्राप्त किया, उनके विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षण का स्तर बेहतर था।

उद्देश्य–5: क्रियान्वयन में प्रमुख बाधाएँ

सारणी 4.8

समस्या	प्रतिशत (%)
अपर्याप्त प्रशिक्षण	82
ICT संसाधनों की कमी	76
समय का अभाव	71
बड़ी कक्षाएँ	68
परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था	79
शिक्षण सामग्री का अभाव	65

व्याख्या: अधिकांश शिक्षकों ने बताया कि अपर्याप्त प्रशिक्षण (82%) तथा परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था (79%) दक्षताआधारित शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में सबसे बड़ी बाधाएँ हैं।

समग्र निष्कर्ष:

उपरोक्त विश्लेषण से निम्न तथ्य सामने आए—

1. शिक्षक राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

2. निजी विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षा का क्रियान्वयन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया।
3. शिक्षक प्रशिक्षण का क्रियान्वयन पर महत्वपूर्ण प्रभाव है।
4. ICT संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव तथा पारंपरिक परीक्षा प्रणाली प्रमुख चुनौतियाँ हैं।
5. विद्यालयों में सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development) कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

❖ **चर्चा, निष्कर्ष एवं सुझाव**

18. परिणामों की चर्चा (Discussion of Findings)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत माध्यमिक विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षा (Competency-Based Education) के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन करना था। नमूना आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों की तुलना पूर्ववर्ती अध्ययनों एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रावधानों से की गई।

अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश शिक्षक राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्यों तथा दक्षताआधारित शिक्षा की अवधारणा से परिचित हैं। यह निष्कर्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा NCERT द्वारा जारी अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) संबंधी दिशा-निर्देशों के अनुरूप है। यद्यपि शिक्षक इस नई शिक्षण पद्धति को अपनाने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, फिर भी वास्तविक कक्षा-कक्ष में इसका पूर्ण क्रियान्वयन अनेक कारणों से प्रभावित हो रहा है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि निजी विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षा का क्रियान्वयन सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा अधिक प्रभावी है। इसका प्रमुख कारण अपेक्षाकृत बेहतर आधारभूत संरचना, ICT संसाधनों की उपलब्धता, नियमित शिक्षक प्रशिक्षण तथा विद्यालय प्रशासन का सक्रिय सहयोग है। दूसरी ओर, अनेक सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी, बड़ी कक्षाएँ तथा प्रशासनिक दायित्वों के कारण शिक्षक अपेक्षित स्तर पर दक्षताआधारित गतिविधियाँ संचालित नहीं कर पा रहे हैं।

सहसंबंध विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षण और दक्षताआधारित शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के बीच सकारात्मक संबंध है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि नियमित व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development) कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों की क्षमता बढ़ाकर नीति के उद्देश्यों को अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है।

19. प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं—

1. अधिकांश शिक्षक राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की मूल अवधारणाओं से परिचित हैं।
2. शिक्षकों का दक्षताआधारित शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।
3. निजी विद्यालयों में दक्षताआधारित शिक्षण का स्तर सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा अधिक पाया गया।
4. शिक्षक प्रशिक्षण एवं दक्षताआधारित शिक्षा के क्रियान्वयन के मध्य सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।
5. ICT संसाधनों की उपलब्धता से दक्षताआधारित शिक्षण अधिक प्रभावी होता है।
6. पारंपरिक परीक्षा प्रणाली दक्षताआधारित शिक्षा के पूर्ण क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती है।
7. गतिविधि आधारित एवं परियोजना आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ती है।
8. अधिकांश शिक्षकों ने नियमित प्रशिक्षण की आवश्यकता व्यक्त की।
9. विद्यालय प्रशासन का सहयोग दक्षताआधारित शिक्षा के सफल क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मूल्यांकन प्रणाली में सुधार आवश्यक है।

20. शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं—

- शिक्षक-शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम में दक्षताआधारित शिक्षण एवं मूल्यांकन को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए।
- प्रत्येक विद्यालय में नियमित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
- विद्यालयों में ICT आधारित शिक्षण संसाधनों का विस्तार किया जाना चाहिए।
- परियोजना कार्य, पोर्टफोलियो मूल्यांकन तथा अनुभवात्मक अधिगम को नियमित शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में सहयोगात्मक अधिगम एवं समस्या-समाधान आधारित गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा तक सीमित न रहकर व्यवहारिक एवं अनुप्रयोग आधारित होना चाहिए।

21. सुझाव (Recommendations)

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

1. सभी माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एवं दक्षताआधारित शिक्षा पर नियमित प्रशिक्षण आयोजित किया जाए।
2. विद्यालयों में स्मार्ट कक्षा, इंटरनेट, प्रोजेक्टर तथा डिजिटल शिक्षण सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
3. विद्यालयों में गतिविधि आधारित शिक्षण, परियोजना कार्य तथा अनुभवात्मक अधिगम को नियमित बनाया जाए।
4. परीक्षा प्रणाली में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (Higher Order Thinking Skills) पर आधारित प्रश्नों का अनुपात बढ़ाया जाए।
5. SCERT एवं DIET स्तर पर दक्षताआधारित शिक्षण हेतु मॉड्यूल विकसित किए जाएँ।
6. विद्यालय प्रमुखों को शैक्षणिक नेतृत्व (Instructional Leadership) के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाए।
7. शिक्षकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास (CPD) कार्यक्रम अनिवार्य किए जाएँ।
8. विद्यालयों को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार नवाचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

22. अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study)

1. यह अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।
2. अध्ययन में प्रयुक्त आँकड़े नमूना (Hypothetical) डेटा पर आधारित हैं; वास्तविक शोध के लिए वास्तविक फील्ड डेटा आवश्यक होगा।
3. अध्ययन केवल बिहार राज्य के संदर्भ में तैयार किया गया है।
4. अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है; अन्य शोध विधियों से भिन्न परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

23. भविष्य के शोध के लिए सुझाव

- प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर समान अध्ययन किए जा सकते हैं।
- विभिन्न राज्यों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर दक्षताआधारित शिक्षा के प्रभाव का प्रयोगात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का दीर्घकालिक अध्ययन किया जा सकता है।

24. निष्कर्ष (Conclusion)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को ज्ञान-केंद्रित से दक्षता-केंद्रित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक इस परिवर्तन के

प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, परन्तु इसके सफल क्रियान्वयन के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण, संसाधन, मूल्यांकन सुधार तथा प्रशासनिक सहयोग की आवश्यकता है।

दक्षताआधारित शिक्षा विद्यार्थियों में केवल विषयगत ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी कौशल, समस्या-समाधान क्षमता, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन तथा आत्मविश्वास का विकास करती है। यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रावधानों को विद्यालय स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो भारतीय शिक्षा व्यवस्था अधिक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण तथा भविष्य उन्मुख बन सकती है।

संदर्भ (References) – APA 7th Edition

1. Aggarwal, J. C. (2019). *Teacher and education in a developing society* (5th ed.). Vikas Publishing House.
2. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016). *Research in education* (10th ed.). Pearson Education.
3. Central Board of Secondary Education. (2022). *Assessment and evaluation practices for competency-based education*. CBSE.
4. Cohen, L., Manion, L., & Morrison, K. (2018). *Research methods in education* (8th ed.). Routledge.
5. Creswell, J. W., & Creswell, J. D. (2018). *Research design: Qualitative, quantitative, and mixed methods approaches* (5th ed.). Sage Publications.
6. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.
7. Gupta, S. P. (2021). *Research methodology and statistical techniques*. Sharda Pustak Bhawan.
8. Kothari, C. R. (2019). *Research methodology: Methods and techniques* (3rd ed.). New Age International.
9. Kumar, R. (2019). *Research methodology: A step-by-step guide for beginners* (5th ed.). Sage Publications.
10. Mangal, S. K. (2021). *Advanced educational psychology*. PHI Learning.
11. National Council of Educational Research and Training. (2021). *Learning outcomes at the secondary stage*. NCERT.
12. National Council of Educational Research and Training. (2023). *National Curriculum Framework for School Education (NCF–SE 2023).* NCERT.

13. PARAKH, NCERT. (2024). *Establishing equivalence across education boards: Towards empirically grounded guidelines for implementation of NEP 2020*. NCERT.
14. OECD. (2019). *OECD Future of Education and Skills 2030*. OECD Publishing.
15. OECD. (2024). *Reimagining education, realising potential*. OECD Publishing.
16. Sangai, S. (2021). Towards competency-based education: National Education Policy 2020. *Journal of Indian Education, 47*(2), 7–13.
17. Sen Gupta, M. (2020). Towards competency-based education. *Journal of Indian Education, 46*(1), 43–49.
18. Sharma, R. A. (2018). *Fundamentals of educational research*. Loyal Book Depot.
19. Singh, Y. K. (2019). *Educational research*. APH Publishing Corporation.
20. UNESCO. (2021). *Reimagining our futures together: A new social contract for education*. UNESCO Publishing.
21. UNESCO International Institute for Educational Planning. (2020). *Competency-based approach to technical and vocational education and training in Africa: Synthesis report*. UNESCO-IIEP.
22. UNICEF India. (2021). *Transforming education through competency-based learning and assessments in India*. UNICEF.
23. Wiggins, G., & McTighe, J. (2005). *Understanding by design* (2nd ed.). ASCD.
24. Jhalani, A., Bhargava, M., & Agrawal, H. (2023). Teaching competency: Challenges and opportunities (With reference to NEP 2020). *Educational Administration: Theory and Practice, 29*(4), 6110–6117.
25. Chaudhary, U. (2024). Transforming accountancy education in schools: Competency-based education and assessment. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5*(1), 1048–1055.